بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुज़्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **06.11.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से तहरीक-ए-जदीद का 81 वाँ वर्ष समाप्त हुआ तथा 82 वाँ वर्ष आरज़्म हो चुका है । ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए बलिदान करो। उस चीज़ की क़ुर्बानी करो जिससे तुम सुविधा प्राप्त कर रहे हो, लाज़ान्वित हो रहे हो। उस वस्तु की क़ुर्बानी करो जो तुम्हें सरलता एंव सुविधा प्रदान कर रही है, उस चीज़ की क़ुर्बानी करो जो तुम्हारी पीढ़ियों के भविष्य को संवारने का भी प्रत्यक्षतः तुम्हारी दृष्टि में साधन है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ۚ وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ شَیۡءٍ فَاِنَّ اللّٰہَ بِہٖ عَلِیۡمٌ तुम कदापि नेकी को नहीं पा सकते यहाँ तक कि तुम उन चीज़ों में से ख़र्च करो जिनसे तुम मुहब्बत करते हो और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो तो निःसन्देह अल्लाह उसको भली भांति जानता है।

प्रत्येक मोमिन की यह इच्छा होती है कि वह नेकी करके अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करे। अल्लाह तआला ने इस आयत में मोमिनों को यह ध्यान दिलाया है कि यदि तुम नेकी की कामना करते हो, ताकि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त कर सको तो याद रक्खो कि नेकी बलिदान चाहती है। अतः ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए क़ुर्बानी करो उस चीज़ की क़ुर्बानी करो जिससे तुम सुविधा प्राप्त कर रहे हो, लाज़ान्वित हो रहे हो। उस वस्तु की क़ुर्बानी करो जो तुम्हें सरलता एंव सुविधा प्रदान कर रही है, उस चीज़ की क़ुर्बानी करो जो तुम्हारी पीढ़ियों के भविष्य को संवारने का भी प्रत्यक्षतः तुम्हारी दृष्टि में साधन है। अतः समस्त प्रकार की क़ुर्बानियाँ कोई असाधारण क़ुर्बानियाँ नहीं हैं। माल तो इंसान को सदैव प्यारा रहा है इसका वर्णन अल्लाह तआला ने भी फ़रमाया है कि सोना, चाँदी, जानवर, सज़्पत्ति, खेत तथा बाग़, ये सब इंसान को बड़े प्यारे हैं तथा ये इंसान के लिए घमंड का कारण हैं, इन पर घमंड करता है। हर एक वर्ग में धन के प्रति प्रेम और जीवन चर्या के नाम पर नई से नई वस्तुओं की अभिलाषा, अपनी चरम सीमा को पहुंची हुई है तथा भौतिकवाद अपनी अन्तिम सीमा पर है। इन परिस्थितियों में ये बातें करना कि नेकी की प्राप्ति के लिए उन चीज़ों को ख़र्च करो जिनके संग तुम्हें मुहब्बत है। अपनी इच्छाओं को बलिदान करो, अपनी सुविधाओं को क़ुर्बान करो। साधारण सांसारिक मनुष्य के लिए यह अद्भुत सी बात है परन्तु दुनिया को पता नहीं कि इस ज़माने में भी ऐसे लोग हैं जो क़ुरआन-ए-करीम की इस शिक्षा का बोध रखते हैं इसके अनुसार काम करने का प्रयास करते हैं, जो ऐसी नेकियों का प्रयास करते हैं जो अन्य लोगों के लिए क़ुर्बानी की चरम सीमा है तथा इसके आज्ञापालन में यह नहीं देखते कि मुझे क्या चीज़ प्यारी है। इस समय सर्व प्रिय वस्तु केवल अल्लाह तआला के आदेश का पालन है। उस नेकी को करने का प्रयास करते हैं जो ईश्प्रेम को बढ़ाने वाली हो। विश्व का बड़ा भाग नहीं जानता कि ये कौन लोग हैं? ये वे लोग हैं कि जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ तथा ज़माने के इमाम से जुड़कर वास्तविक नेकी को पाने का ज्ञान प्राप्त किया, जिन्होंने नेकी को पाने के लिए नेकी के इन रोशन मीनारों द्वारा उचित मार्गों पर चलने का निर्देश प्राप्त किया है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़ैज़ पाने वाले थे, जिनकी क़ुर्बानियों के स्तर भी आश्चर्य जनक थे।

एक हदीस में आता है कि जब यह आयत अवतरित हुई कि لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ۚ وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ شَیۡءٍ فَاِنَّ اللّٰہَ بِہٖ عَلِیۡمٌ हज़रत अबू तलहा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि मेरी सबसे प्यारी सज़्पत्ति बैरूहा का बाग़ है, मैं उसे अल्लाह तआला की भेंट करता हूँ। तो ये वे लोग हैं जो चमकते हुए तारे थे और नेकियों के रास्ते निश्चित करने वाले थे। अतः इन सहाबा के उदाहरण देते हुए हमें इस ज़माने के इमाम ने बार बार ध्यान दिलाया। आप अलै. ने अपने असंज़्य कथनों में क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाएँ एंव आदेश खोल कर बयान किए, नेकियों की प्राप्ति के लिए ज्ञान एंव विवेक प्रदान किया। एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि व्यर्थ एंव खोटी वस्तुओं के ख़र्च द्वारा कोई व्यक्ति नेकी का दावा नहीं कर सकता, नेकी का द्वार सूक्ष्म है अतः यह बात मस्तिष्क में बिठा लो कि तुच्छ वस्तुओं को ख़र्च करने से कोई इसमें प्रवेश नहीं पा

सकता, क्यूँकि स्पष्ट निर्देश है कि لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ जब तक प्यारी से प्यारी चीज़ों को ख़र्च न करोगे, उस समय तक प्यारा और प्रियतम होने का स्तर नहीं मिल सकता। यदि कठिनाई उठाना नहीं चाहते और वास्तविक नेकी को ग्रहण करना नहीं चाहते तो कैसे सफल और कामयाब हो सकते हो। क्या सहाबा किराम मुफ़्त में इस श्रेणी तक पहुंच गए जो उनको प्राप्त हुआ। सांसारिक उपाधियों की प्राप्ति के लिए कितने ख़र्च तथा कितनी कठिनाईयाँ सहन करनी पड़ती हैं तो फिर कहीं जाकर एक साधारण उपाधि, जिसके द्वारा मन की शांति एंव संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती, मिलता है। फिर सोचो कि रज़ीअल्लाहु अन्हुम की उपाधि जो मन के संतोष तथा दिल की संतुष्टि और मौलाए करीम की प्रसन्नता का निशान है, क्या यूँ ही आसानी से मिल गया? बात यह है कि ख़ुदा तआला की प्रसन्नता जो वास्तविक आनन्द का कारण है, प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक अस्थाई विपत्तियाँ सहन न की जाएँ। ख़ुदा ठगा नहीं जाता, मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए कठिनाईयों की चिंता न करें क्यूँकि स्थाई आनन्द और स्थाई आराम का प्रकाश उस अस्थाई कठिनाई के बाद मोमिन को मिलता है।

फिर एक मज्लिस में जमाअत के लोगों को उपदेश देते हुए सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि दुनिया में इंसान माल से बड़ा प्रेम करता है इसी लिए स्वप्न-फल की विद्या में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सपने में देखे कि उसने जिगर निकालकर किसी को दिया है तो इसका अर्थ माल है। यही कारण है कि वास्तविक तक़्वा और ईमान की प्राप्ति के लिए कि वास्तविक नेकी को कदापि नहीं पाओगे जब तक कि तुम सर्वप्रिय चीज़ को क़ुर्बान न करोगे। अतः माल का अल्लाह तआला के लिए ख़र्च करना जी इंसान के सौभाग्य एंव तक़्वा के चलन के स्तर का निशान है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो जमाअत पैदा की उसने न केवल इन बातों को सुनकर इस प्रकार यह नहीं किया कि केवल सुन लिया और मुंह दूसरी ओर कर लिया तथा ध्यान दूसरी ओर फेर लिया बल्कि इन बातों को सुनने के पश्चात क़ुर्बानियों के स्तर भी स्थापित किए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वंय भी कई स्थानों पर विभिन्न गोष्ठियों में इस बात का वर्णन किया है। एक अवसर पर आप अलै. ने फ़रमाया जमाअत के क़ुर्बानी के स्तर को देखते हुए कि मैं देखता हूँ कि सहस्त्रों लोग ऐसे भी हमारी जमाअत में शामिल हैं जिन के शरीर पर कठिनाई से ही लिबास होता है, बड़ी कठिनाई से चादर या पायजामा उनको मिलता है। उनकी कोई सज़्ज़ति नहीं परन्तु उनकी असीमित श्रद्धा एंव निष्ठा तथा मुहब्बत एंव आज्ञापालन से मन में एक आश्चर्य और असाधारणता की भावना उत्पन्न होती है। फिर एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि जो कुछ प्रगति एंव बदलाव हमारी जमाअत में पाया जाता है वह संसार में किसी अन्य में नहीं।

अतः आपसे सीधे फ़ैज़ पाने वालों ने यह स्तर प्राप्त किया तथा आपसे प्रसन्नता प्राप्ति का प्रमाण प्राप्त किया परन्तु क्या यह श्रद्धा एंव निष्ठा समय बीतने के साथ नष्ट हो गया? निःसन्देह नहीं, आज भी ऐसे लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में, पुरुषों में से भी, महिलाओं में से भी तथा बच्चों में से भी हैं जो श्रद्धा एंव निष्ठा में बढ़े हुए हैं। केवल कुछ अथवा केवल कुछ अवसरों पर ही नहीं बल्कि हज़ारों ऐसे उदाहरण हैं तथा विश्व के विभिन्न देशों में फैले हुए हैं जो لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ का वास्तविक आभास रखते हैं, जो क़ुर्बानियों में बढ़ते चले जा रहे हैं। इन श्रद्धालुओं की क़ुर्बानियों के कुछ नमूने मैं इस समय पेश करता हूँ। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बड़ी कठिनाई से शरीर पर वस्त्र होते हैं परन्तु श्रद्धा एंव निष्ठा में बढ़े हुए हैं, इसका एक उदाहरण देता हूँ।

यह उदाहरण एक महिला का है और महिला भी वह जो नेत्रहीन है। सेरालियोन से हमारे एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक जमाअत है यहां ममबारू, वहाँ एक नेत्रहीन महिला रहती है जिन्होंने तहरीक-ए-जदीद के चन्दे का वादा दो हज़ार लियोन लिखवाया। चन्दा वसूल करने के लिए जब उनके पास गए तो कहने लगी कि मुझे चन्दे की अदायगी की पहले चिंता हो रही थी परन्तु अंधी होने के कारण मेरी आमदनी का साधन इतना नहीं कि मैं कोई चन्दा दे सकती। परन्तु उन्होंने कहा कि क्यूँकि मैंने वादा किया है अतः मैं अदा करूंगी। अतः वे दुआ में लीन हो गई इसी बीच एक अपरिचित व्यक्ति गाँव में आया तो उस व्यक्ति से कहने लगी कि मेरे पास इस समय एक सिर पर बांधने वाला कपड़ा है वह दो हज़ार लियोन में तुम ख़रीद लो। यद्यपि वह कपड़ा, ये कहते हैं कि दस पन्द्रह हज़ार लियोन का था। उस व्यक्ति ने चकित होकर पूछा कि इतना सस्ता क्यूँ बेच रही हो। इस पर उस महिला ने बताया कि मैंने तहरीक-ए-जदीद में चन्दा अदा करना है और मेरे पास इस समय रक़म नहीं है। उस अपरिचित व्यक्ति ने वह कपड़ा ख़रीद लिया तथा दो हज़ार लियोन उस नेत्रहीन महिला को दे दिए। सज्जन पुरुष था वह, और बाद में वह कपड़ा भी वापस कर दिया और कहा यह मेरी ओर से आप रख लें। तो अफ़्रीक़ा के दूर सदूर क्षेत्र में रहने वाली एक अशिक्षित नेत्रहीन महिला की यह श्रद्धा है। निःसन्देह यह श्रद्धा अल्लाह तआला की ओर से पैदा की गई है।

राजिस्थान इंडिया के मुबल्लिग़ इन्चार्ज लिखते हैं कि एक जमाअत है यहाँ बोला भाली, वहाँ एक दोस्त जिनकी आयु 65 वर्ष

है अधिकतर बीमार रहते हैं तथा कोई आय नहीं है उनकी। उन्हें जब माल की क़ुर्बानी की ओर ध्यान दिलाया गया कि थोड़ी सी टोकन के रूप में क़ुर्बानी कर दें। क्यूँकि यह मोमिनों के लिए भी अनिवार्य है तो एक हज़ार पचास रुपए चन्दे के अदा कर दिए और कहने लगे कि यह रक़म मैंने अल्लाह तआला के लिए एकत्र की थी और यह अल्लाह तआला की ही रक़म है। फिर श्रद्धा एंव निष्ठा में बढ़े हुए एक अन्य श्रद्धालु की घटना सुनें। निःसन्देह यह पदाधिकारियों को झंझोड़ने वाली है। बेनिन के अमीर साहब लिखते हैं कि यहाँ एक पुराने अहमदी दोस्त का नाम चन्दा देने वालों में लिखा हुआ था। जब उन्हें ध्यान दिलाया गया तो अगले दिन मिशन हाउस आए और कहने लगे कि क्या आपने देखा है कि जिसने एक सप्ताह से खाना न खाया हो। कहते हैं, मैं सारी रात रोता रहा हूँ कि मैंने तहरीक-ए-जदीद का चन्दा अदा करना है और मेरे पास पैसे नहीं हैं। सम्भतः अल्लाह तआला मेरी परीक्षा ले रहा है। इसके बाद उन्होंने तुच्छ सी रक़म तहरीक-ए-जदीद में दी। इस पर ये जो लेने वाले साहब गए थे, कहते हैं विनीत ने उनको कुछ रक़म सहायता के रूप में दी तो उन्होंने दस फ्रांक सैफ़ा उसी समय वापस कर दिया और कहा कि अभी मेरा चन्द आम शेष है। आप इस रक़म में से मेरे चन्दे का बक़ाया काट लें। तो यह है श्रद्धा एंव निष्ठा, जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि शरीर पर कपड़े नहीं परन्तु श्रद्धा में बढ़े हुए हैं।

फिर नायब वकीलुल माल हैं, क़ादियान से लिखते हैं कि कोडियाथूर अहमदिया जमाअत में जुम्अः के ख़ुत्बः में तहरीक-ए-जदीद का महत्व बयान किया गया और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. की पुकार पर तुरन्त लब्बैक कहने वाले कुछ श्रद्धालुओं की क़ुर्बानियों का वर्णन किया गया। इस पर वहाँ की जमाअत की लजना अमाउल्लाह की सदर ने अपने सोने का एक भारी कंगन उतार कर तहरीक-ए-जदीद में पेश कर दिया। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दीन के लिए अपना प्रिय आभूषण क़ुरबान करना, यह आज केवल अहमदी महिलाओं की ही श्रेष्टता है। जर्मनी के तहरीक-ए-जदीद के नेशनल सैक्रेट्री लिखते हैं कि यहाँ एक जमाअत हनाओ में तहरीक-ए-जदीद के संदर्भ में एक विचार गोष्ठि का आयोजन किया गया। गोष्ठि की समाप्ति पर एक दोस्त अपनी पत्नि के आभूषण लेकर तहरीक-ए-जदीद के दफ़्तर में आ गए। उनकी पत्नि अपनी शादी के आभूषण तहरीक-ए-जदीद में दे दिए।

लाहौर के अमीर साहब लिखते हैं कि एक महिला का तहरीक-ए-जदीद का वादा उच्च स्तरीय था परन्तु फिर भी जब उन्हें टार्गेट पूरा करने के विषय में और अधिक देने की प्रेरणा दी तो तुरन्त आभूषणों का डिब्बा ले आईं उसमें से भारी कड़े निकाले तथा तहरीक-ए-जदीद में पेश किए। अब देखें कि एक महिला हिन्दुस्तान के दक्षिण में रहती है। विभिन्न क़बीले, विभिन्न लोग, विभिन्न क़ौम, भाषा भिन्न, दूसरी पंजाब पाकिस्तान में और तीसरी जर्मनी में रहती है परन्तु क़ुर्बानी करने की भावना और सोच एक है। यह इकाई है, ये क़ुर्बानी के स्तर हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत में पैदा फ़रमाए हैं। ये अल्लाह तआला के फ़ज़्ल हैं जो अहमदियों पर अल्लाह तआला फ़रमाता है। नौमुबाईन माल की क़ुर्बानी में भी अब बहुत बढ़ रहे हैं आगे, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से। अल्लाह तआला क़ुर्बानी करने वालों पर जिस प्रकार कृपा करता है तथा जिस प्रकार क़ुर्बानी को फल लगते हैं और फिर इसके परिणाम स्वरूप उनके ईमान में और श्रद्धा में और अधिक प्रगति होती है, उसके कुछ उदाहरण पेश करता हूँ।

नायब वकीलुल माल क़ादियान लिखते हैं कि केरला की एक जमाअत पत्था पिरयम के एक दोस्त ने फ़ोन पर बताया कि हुज़ूर ने गत वर्ष तथा अफ़्रीक़ा के ख़ुत्बः में जो उदाहरण दिए थे, श्रद्धालुओं का वर्णन किया था, जिन्होंने निर्धन होते हुए तहरीक-ए-जदीद के चन्दे में बढ़ चढ़ कर अपना योगदान दिया और हम तो फिर भी सामर्थ्य रखते हैं इस लिए मेरा चन्दा तहरीक-ए-जदीद का वादा दो लाख रुपए बहुत कम है उसे बढ़ाकर पाँच लाख रुपए कर दें। कुछ समय पश्चात अपना चन्दा पूरा अदा कर दिया और कहने लगे तहरीक-ए-जदीद के वादे में वृद्धि करने के साथ ही अल्लाह तआला ने मेरे काम अत्यधिक बरकत डाली और अब मेरे पास इतना काम है कि संभालना कठिन हो रहा है। फिर इंस्पैक्टर तहरीक-ए-जदीद हैं इब्राहीम साहब, वे कहते हैं कि गुलबर्गा जमाअ के एक ख़ादिम ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए अपनी एक महीने की आय 73600 रुपए तहरीक-ए-जदीद के चन्दे में लिखवाई लेकिन अदायगी के समय श्रीमान जी ने असाधारण वृद्धि के साथ एक लाख पाँच सौ गयारह रुपए की अदायगी की इसके परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला ने उन्हें एक चमत्कार दिखाया कि एक व्यक्ति के ज़िम्मे उनकी एक बड़ी रक़म देय थी। श्रीमान उस रक़म की वापसी से बिल्कुल निराश हो चुके थे लेकिन एक दिन सहसा वह व्यक्ति आया तथा खेद प्रकट करते हुए पूरी रक़म अदा कर दी। माल की क़ुर्बानी से अल्लाह तआला ईमान में किस प्रकार दृढ़ता प्रदान करता है। विश्व में विभिन्न स्थानों पर इसके दृश्य दिखाई देते हैं।

अज़बिकस्तान के एक नौमुबाए दोस्त हैं, वाहिद वोच साहब, वे कहते हैं कि जब से मैंने बैअत की है तथा चन्दा देना आरम्भ किया है, मेरी आय में आश्चर्य जनक वृद्धि हुई है। पिछले तेरह वर्षों में मेरी इतनी आमदनी नहीं हुई जितनी इस साल में हुई है और मुझे इस बात का सम्पूर्ण विश्वास हो गया है कि यह ख़ुदा तआला के मार्ग में ही ख़र्च करने की बरकत है। नए आने वाले भी श्रद्धा एंव निष्ठा में बढ़ रहे हैं। अरब देश के एक दोस्त हैं जिन्होंने नवम्बर 2011 में बैअत की थी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अब उनकी पत्नि भी,

पहले अहमदी नहीं थीं वे भी बैअत करके जमाअत में शामिल हो गईं हैं और इस वर्ष दोनों पति-पत्नि ने लगभग चौदह हज़ार पाउंड तहरीक-ए-जदीद में अदायगी की है चन्दे की, जो उनकी स्थानीय जमाअत में से किसी भी परिवार की ओर से की जाने वाली सबसे बड़ी क़ुर्बानी है। माल की क़ुर्बानी के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के असंज्य वृत्तांत सामने आते हैं। इस ज़माने में संसार की प्राथमिकताएँ आनन्द एंव सुविधाओं की ओर हैं परन्तु अहमदी अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए बलिदान करते हैं। योगेंडा से गांगा रीजन के एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि हमने बोसो जमाअत के एक सदस्य को तहरीक-ए-जदीद का वादा पूरा करने की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने उसी समय एक, बेचारों के पास और कुछ नहीं था एक मुर्ग़ा घर में था, उसके बराबर मूल्य अपने वादे के रूप में पेश कर दिया।

अमरीका के नैशनल सैक्रेट्री तहरीके जदीद लिखते हैं कि एक गयारह साल का बच्च वीडियो गेम ख़रीदने के लिए पैसे एकत्र कर रहा था। जब तहरीक-ए-जदीद के चन्दे की प्रेरणा की गई तो उसने वीडियो गेम ख़रीदने के लिए जो एक सौ डालर जमा किए हुए थे वे चन्दे में अदा कर दिए। इस प्रकार उस बच्चे ने दीन को दुनिया पर प्राथ्मिकता देने का वादा पूरा करके दिखाया। योगेंडा से अगांगा रीजन के एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि हमारे रीजन की एक जमाअत नाचेरे के एक बच्चे ने नमाज़ सीखी और अब वहाँ अपनी जमाअत में नमाज़ पढ़ाता है तथा जुज़्अः भी पढ़ाता है। अमीर साहब ने उसको प्रोत्साहित करते हुए उसे कुछ इनाम दिया तो उसने वे पैसे तहरीक-ए-जदीद में अदा कर दिए। उस बच्चे को देखकर उस जमाअत के दूसरे बच्चों में भी चन्दा देने का उत्साह पैदा हुआ।

अतः दुनिया के हर कोने में अल्लाह तआला ऐसे श्रद्धालु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को प्रदान कर रहा है जो क़ुर्बानी की आत्मा को समझते हैं अल्लाह तआला करे कि यह भावना सदैव उन्नति करती रहे तथा सभी तक़्वा में बढ़ते चले जाने हों। इस समय मैं तहरीक-ए-जदीद के नए साल की घोषणा करते हुए गत वर्ष की रिपोर्ट पेश करता हूँ संक्षेप में। अल्लाह तआला की कृपा से तहरीक-ए-जदीद का इक्यासी वाँ वर्ष समाप्त हुआ 31 अक्तूबर को तथा बयासी वाँ वर्ष आरम्भ हो गया, इसमें प्रवेश हो गया है और जो रिपोर्टस आईं हैं अब तक इस वर्ष तहरीक-ए-जदीद के माली निज़ाम में कुल वसूली बानवे लाख सतरह हज़ार आठ सौ पाउंड हुई है। यह वसूली पिछले साल की तुलना में सात लाज़ सैंतालीस हज़ार पाउंड अधिक है।

तत्पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने दुनिया के विभिन्न देशों की पोज़ीशन पेश फ़रमाई। इसके अनुसार पाकिस्तान सर्वप्रथम है इसके बाद पहली दस पोज़ीशन के देश क्रमानुसार इस प्रकार हैं जर्मनी, बर्तानिया, अमरीका, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, भारत, मिडिल ईस्ट, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की अन्य जमाअत फिर ग़ाना। इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने इन देशों की जमाअतों तथा ज़िलों का विवरण पेश करने के बाद फ़रमाया कि इंडिया की दस जमाअतें इस प्रकार हैं। करुलाई, हैदराबाद, कालीकट, क़ादियान, पत्था पीरियम, केनानूर टाउन, पियंगाडी, कलकत्ता, बंगलौर, कर्नाटक, सोरो, तमिल नाडु तथा क़ुर्बानी के अनुसार इंडिया के दस प्रदेशों जो हैं वे केरला, तमिल नाडु, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश, जम्मू कशमीर, उड़ीसा, पंजाब, बंगाल, देहली, महाराष्ट्र।

अल्लाह तआला इन समस्त भाग लेने वालों के मालों तथा जानों में अत्यधिक बरकत डाले तथा उन्हें श्रद्धा और निष्ठा में बढ़ाता रहे।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 06.11.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*